फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 158 अगस्त 2001

मण्डी की महिमा

- ऐन सीजन में व्हर्लपूल एक महीने बन्द
- टेकमसेह भी साथ-साथ बन्द
- एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक 15 दिन बन्द
- यामाहा में एक शिफ्ट

वर्क लोड में भारी वृद्धि। उत्पादन के ढेर लगे हैं। माल बिक नहीं रहा।

दुकानदारी नहीं है जिन्दगी
चक्रव्यूहों की काट हैं तालमेल

"क्या फायदा ?" – यह एक ऐसा नासूर है जो हर समय रिसता रहता है। "लाभ-हानि" के अनन्त हिसाब-किताब निकटजनों को प्रियजन नहीं रहने देते। दुकानदारी-प्रवृति क्रूरता के लिये दलीलें प्रदान करती है और परस्पर-डर को ढाल बनाती है।

पता नहीं पत्ता भी अल्लाह की मर्जी से ही हिलता है अथवा नहीं। यह भी नहीं मालूम कि राम कण-कण में व्याप्त है अथवा नहीं। पर हाँ, सँसार-व्यापी बनी दुकानदारी-प्रवृति सूक्ष्म-दर-सूक्ष्म भी होती जा रही है। लाभ-हानि के हिसाब-किताब माँ-बेटे के बीच पैर पसारे हैं, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के साथ तक दुकानदारी करने लगी-लगा है। लाभ शुभ हो अथवा अशुभ, लाभ के लिये कुछ भी पवित्र नहीं होता।

उपरोक्त के लिये उदाहरणों की किसे जरूरत है ? प्रत्येक द्वारा स्वयं अपने को देखना-भर पर्याप्त है।

ऐसे में हिसाब-किताब नहीं रखना पागलपन और गलत हिसाब लगाना बेवकूफी बन कर ऐसे चक्रव्यूहों को जन्म देते हैं कि जीवन छटपटाहट बन जाता है।

कालकोठरियाँ

"कोई मूर्ख नहीं है। सब जानते हैं। मजबूरी में झेलते हैं। क्या करें ?" – थोड़ा-सा कुरेदने पर विस्फोटक फट पड़ने के समान इस प्रकार की बातें होती हैं। बातचीत के आगे बढने पर प्रत्येक के चक्रव्यूह-दर-चक्रव्यूह में फँसे होने की हकीकत उभरती है : घर-परिवार की रंग-बिरंगी बेड़ियाँ ; दोस्तों-सहकर्मियों के विभिन्न प्रकार के फन्दे ; परिचितों-अपरिचितों के दृश्य-अदृश्य जाल।

इतनी मजबूरियाँ, इतने बन्धन, इतने विरोध, इतनी रुकावटें प्रत्येक को जकड़े लगते हैं कि हर कोई जो कर रही-रहा है वह ही ऐसे में सम्भव तथा व्यवहारिक लगता है।

सहयोग की, सहायता की जिनसे आशा कर के कालकोठरियों को चुनौती दी जा सकती है वे स्वयं ही चक्रव्यूह नजर आते हैं तब असहायता से उपजी अकर्मण्यता पूरे माहौल को मनहूस बना देती है।

दरारें

दुकानदारी के लिये किये जाते तालमेल बहुत व्यापक हैं। चालाकी वाले यह तालमेल बहुत सतही और छिछले होते हैं। मनहूस माहौल में दरारें डालने की बजाय दुकानदारी तालमेल मनहूसता को बढाते हैं।

कालकोठरियों में दरारें हमारे वे तालमेल डालते हैं जो सहज होते हैं। चालाकियों को धत्ता बता कर हम एक जैसी समस्याओं से जूझते समय तालमेल करते हैं तब हम मनहूस माहौल में दरारें डालते हैं। दिखावटी हल्ले-गुल्ले वाले नहीं बल्कि हँसी-खुशी वाले वातावरण की रचना के लिये मन से किये जाते हमारे तालमेल विकल्पों के वास्ते आधार प्रदान करते हैं।

तालमेलों में बाधायें

यह सही है कि मजबूरियाँ हमें अक्सर तालमेलों की तरफ धकेलती हैं। लेकिन यह भी सही है कि मजबूरी वाले तालमेलों में कई खतरे घात लगाये बैठे रहते हैं और चालाकी ऐसे तालमेलों में अक्सर पलीता लगाती है।

नये लोग, नई जगह, भिन्न रीति-रिवाज के कारण एक-दूसरे के साथ तालमेलों के विकसित होने में समय लगता है लेकिन यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। तालमेल नहीं होने देने और तालमेल होने पर तोड़फोड़ का एक प्रमुख कारण हमारे विचार से परस्पर आदर-सम्मान में कमी होना है।

एक ही जगह के निवासी ; एक ही भाषा और खान-पान वालों के बीच तालमेलों में कमी इसी कारण लगती है, परस्पर आदर-सम्मान में कमी के कारण लगती है। यहाँ समस्या की एक प्रमुख जड़ इंगित होती लगती है।

यह ऊँच-नीच के पक्षधरों द्वारा पीढी-दर-पीढी फैलाये संस्कार हैं जो हमारे पैमानों को प्रभावित करते हैं। जबकि, सिर-माथों पर बैठने वाले जिन बातों को किसी के आदर-सम्मान के लिये आवश्यकता बताते हैं उनका हमारे जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता। विगत में अफीम के नशे में निडर रहना हो अथवा आज होड़ में निर्ममता से रौंद डालना – इन से भला हमारा क्या साँझा है ?

महामानव नहीं बल्कि सामान्यजन हमारे लिये आदरणीय-सम्माननीय हैं। इसलिये व्यक्तियों-व्यक्तित्वों के प्रति एक बहुत ही अलग मापदण्ड की हमें जरूरत है। नये पैमाने हमारे बीच तालमेलों को बढाने के लिए भी आवश्यक हैं। (जारी)■

और बातें यह भी

एस्कोर्ट्स मजदूर : "सूरजपुर में भी काम ढीला है। यामाहा की असेम्बली लाइन एक शिफ्ट ही चलती है। काम हम सूरजपुर करते हैं पर पेमेन्ट हमें फरीदाबाद के हिसाब से करते थे। केस-वेस के बाद एरियर के तौर पर 25 हजार रुपये प्रत्येक वरकर को देने पड़े लेकिन फिर भी मैनेजमेन्ट का वही ढर्रा जारी है और दो साल के हमारे यह पैसे फिर बकाया हो गये हैं।

"रेलवे डिविजन में हम 23 जुलाई से बाहर बैठे हैं। कुछ हो तो बतायें। एक ठेकेदार का ठेका खत्म कर कम्पनी ने बरसों से काम कर रहे 5 वरकरों को निकाल दिया जबकि ठेकेदार बदलते रहते हैं पर वरकर वही रहते हैं। लीडरों ने इस पर कहा कि उन वरकरों की जगह कोई काम नहीं करेगा। मैनेजमेन्ट ने वहाँ काम करने से इनकार करने वाले मजदूरों के 'काम नहीं, वेतन नहीं' वाली चोट मारनी शुरू की और फिर एक लीडर को सस्पैन्ड कर दिया। इस पर लीडरों ने कहा कि वार्निंग-चार्जशीट-सस्पैन्ड से बचने के लिये सब बाहर चलो। और, 23 जुलाई से हम 430 मजदूर बाहर बैठे हैं। आखिरकार मैनेजमेन्ट ने 2 अगस्त को लीडरों से पूछा कि **तुम्हारी**

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून परे शोषण की

वैष्णव सिन्थेटिक्स मजदूर : "प्लॉट 231 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में डाइंग का काम होता है। कहने को ठेकेदार के जरिये रखते हैं। बारह घण्टे की ड्युटी है जिसके बदले कारीगर को 85-90 रुपये और हैल्पर को 70 रुपये देते हैं। निकालते और भर्ती करते रहते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं।"

सिम्पलैक्स इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 127 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में मई और जून की तनखायें आज 19 जुलाई तक नहीं दी हैं। एक मजदूर थोड़ा लेट हो गया तो उसे फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। एतराज करने पर 15 जून को मैनेजमेन्ट ने 17 वरकरों को गेट बाहर कर दिया। श्रम विभाग में शिकायत की, 3-4 तारीख पड़ चुकी हैं पर हमारी कोई सुनवाई नहीं होती।"

पूजा फोरजिंग मजदूर : "1/41 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10 घण्टे रोज की ड्युटी है। रविवार को भी ड्युटी है, कोई साप्ताहिक छुट्टी नहीं। महीने के तीसों दिन और हर रोज 10 घण्टे काम करने पर हैल्परों को कहने को तो 1900 रुपये देते हैं लेकिन इनमें से ई.एस. आई. व पी.एफ. के नाम से 700-800 रुपये काट लेते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। निकाल देने के बाद फण्ड से पैसे निकालने का फार्म कम्पनी भर कर नहीं देती। हद तो यह भी है कि बोनस की राशि पर हस्ताक्षर करवा लेते हैं पर पैसे देते नहीं। सरकारी अधिकारी खा-पी कर चले जाते हैं।"

एटॉप प्रोडक्ट्स वरकर : "प्लॉट 24 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में बिना मूँछ वाले मजदूरों को रखते हैं — कई तो 15-16 साल के लड़के होते हैं। निकालने और भर्ती करने का सिलसिला चलता रहता है। रोज 12 घण्टे की ड्युटी लेते हैं। हैल्परों को 1000-1100-1200 रुपये महीना और ऑपरेटरों को 1400-1500-2000-2500 रुपये तनखा देते हैं।"

ग्रोज नेट इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 17 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हम मजदूरों का बुरा हाल है। बरसों ठेकेदारी में रखते हैं। काम का बोझ बहुत ज्यादा है। हर रोज 10 घण्टे काम करवाते हैं और साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं देते। पूरे महीने में एक घण्टे का गेट पास तक नहीं देते। छुट्टी के बाद ही हाथ-पाँव धोने देते हैं, दस घण्टे के बाद 15 मिनट और रुकना पड़ता है। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट कम्पनी सिंगल रेट से करती है। ओवर टाइम के लिये जबरदस्ती रोकते हैं, नहीं रुकने पर निकाल देते हैं।"

सुपर स्विच वरकर : "मई की तनखा हमें 30 जून को जा कर दी और जून की तनखा आज 19 जुलाई तक नहीं दी है। तनखा में भी 1500 रुपये महीना ही देते हैं।" ■

मनीआर्डर

★ "मैं, लवलीन रजक, प्लॉट 279 सैक्टर-24 में नौकरी करता हूँ। अपनी पत्नी के नाम एक हजार रुपये का मनीआर्डर पहली मई को मैंने सैक्टर-22 पोस्ट आफिस से किया था। एक महीना बीत जाने पर भी मनीआर्डर मेरी पत्नी को नहीं मिला तब 13 जून को मैंने सैक्टर-22 डाकखाने में लिखित शिकायत की। फिर 22 जून को नेहरू ग्राउन्ड स्थित बड़े डाकघर में शिकायत दर्ज की। बड़े डाकघर वाले बोले थे कि एक महीने बाद पता करना। आज 23 जुलाई को सुबह मैं बड़े डाकघर पहुँचा तो वहाँ 60-70 मेरे जैसे लोगों का जमघट लगा था। सुबह 11 से शाम 4 बजे तक अफरा-तफरी रही। आखिर में बड़े साहब ने कार्रवाई का आश्वासन दिया और टेलीग्राफ़ से मनीआर्डर पहुँचाने की बात कही। यहाँ पेट काट कर हम अपने बच्चों को पैसे भेजते हैं और तीन महीने मनीआर्डर पहुँचता ही नहीं।"

★ "मैं, अमरेन्द्र कुमार, प्लॉट 270 सैक्टर-24 में नौकरी करता हूँ। अपने मामा जी को एक हजार रुपये का मनीआर्डर 8 मई को मैंने नेहरू ग्राउन्ड स्थित हैड पोस्ट आफिस से भेजा था। फोन करने पर मामा जी ने बताया कि पैसे नहीं पहुँचे हैं तब 21 जून को मैंने हैड पोस्ट आफिस में लिखित शिकायत की। रविवार के रविवार मैं मामा जी को फोन कर पूछता रहा पर मनीआर्डर उन्हें नहीं मिला। इस पर मैंने 11 जुलाई को दूसरी लिखित शिकायत की। फैक्ट्री में रात की ड्युटी के बाद आज 23 जुलाई को मैं भी बड़े डाकघर से झख मार कर आ रहा हूँ। फ़रीदाबाद पोस्ट आफिसों के सीनियर सुपरिटेन्डेन्ट ने टी.एम.ओ. द्वारा पैसे शीघ्र पहुँचाने का आश्वासन दिया है। दो सौ रुपये तो फोन पर मेरे खर्च हो गये हैं। परेशानी, खर्च और अपमान के संगम में डुबकी लगी है।" ■

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

और बातें यह भी... (पेज एक का शेष)

डिमाण्ड क्या है। लीडरों द्वारा ठेकेदार के 5 मजदूरों को ड्युटी पर लेने का जिक्र करने पर मैनेजमेन्ट कागज दिखा कर बोली कि यह देखो, 5 में से 4 तो हिसाब ले गये। लेकिन आज 6 अगस्त को भी हम फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे हैं।

"साल-भर से फार्मट्रैक में ट्रैक्टर दो शिफ्ट की बजाय एक शिफ्ट में ही असेम्बल कर रहे हैं पर वे भी बिक नहीं रहे। कुछ समय से कम्पनी हफ्ते में 2 दिन, 3 दिन की छुट्टी दे रही है। यूनियन द्वारा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को रोक देने पर इधर सफाई के बहाने कैन्टीन बन्द कर मैनेजमेन्ट ने पँगा लिया। काम करो और साढे आठ घण्टे में एक कप चाय भी नहीं .... लेकिन हम नहीं भड़के। झख मार कर मैनेजमेन्ट को अब 15 दिन की सवेतन छुट्टी देनी पड़ी है क्योंकि ट्रैक्टरों के ढेर लगे हैं। भड़क जाते अथवा भड़का दिये जाते तो हम भी रेलवे डिविजन वरकरों की तरह बिना तनखा बाहर होते।

"फस्ट प्लान्ट की ट्रैक्टर डिविजन में दोनों शिफ्टों को एक शिफ्ट में बुला रहे हैं। काम नहीं होने से बन्दों का मूड ही खराब रहता है। ज्यादातर बन्दे बैठे-बैठे परेशान हो जाते हैं। जब दूसरी शिफ्ट वाले काम कर रहे होते हैं तब बैठना पड़ता है, महीने में 15 दिन खाली बैठना पड़ रहा है। ट्रैक्टरों के आर्डर नहीं हैं। मैनेजर भी डरे पड़े हैं।"

अनुराग डाइंग मजदूर : "40 ए, डी.एल. एफ. इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में केमिकल का काम है। रसायन डाल कर जब माल बनता है तब वहाँ ठहरा नहीं जाता, चक्कर आ जाता है। मैं, शकुन्तला, 20 साल से अनुराग डाइंग में काम कर रही हूँ पर फिर भी मेरा नाम रजिस्टर पर नहीं है, तनखा मुझे रजिस्टर पर देने की बजाय दो वाउचरों पर देते हैं, ई.एस.आई. कार्ड मुझे नहीं दिया है और फण्ड की पर्ची भी नहीं। फैक्ट्री में 30-35 वरकर ही हैं और इनमें से भी 4 को हड़ताल में निकाल दिया। आठ-नो महीने पहले हम ढाई महीने फैक्ट्री के बाहर बैठे तब 10-12 अन्य वरकरों के साथ मुझे 1965 रुपये महीना देना शुरू किया अन्यथा हमें 900 रुपये महीना देते थे। इधर जून की तनखा कम्पनी ने हमें आज 14 जुलाई तक नहीं दी है। रजिस्टर में नाम दर्ज करवाने के लिये मैंने श्रम विभाग में शिकायतें की हैं पर श्रम विभाग बस चालान की बातें करता है।"

टालब्रोस वरकर : "मजदूरों की वार्षिक वेतन वृद्धि की बात हो चाहे तीन वर्षीय एग्रीमेन्ट के समय पैसों की माँग हो, मैनेजमेन्ट कहती है कि कम्पनी की हालत खराब है, घाटा हो रहा है, पैसा नहीं है। जब अफसरों की इनक्रीमेन्ट होती है तब कम्पनी की हालत अच्छी हो जाती है — वाइस प्रेसीडेन्ट के वेतन में वार्षिक वृद्धि 35 हजार रुपये की है।"

आदि से अन्त , दलदल है नौकरी

बुजुर्ग : "35 साल के अनुभव वाला टरनर हूँ। ढाँढा इंजिनियरिंग में परमानेन्ट वरकर था, कम्पनी ही बन्द हो गई। इन 14 वर्षों में कई फैक्ट्रियों में काम किया है। इस समय मथुरा रोड़ पर स्टार वायर फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये लगाया गया वरकर हूँ। बुढापा आ गया फिर भी नौकरी-नौकरी की पड़ी है। मरते दम तक नौकरी करनी पड़ेगी। रोज कमाओ तो खाओ –बैठ जाओ तो क्या खाओ ? बच्चे अपने-भर को कमा लें तो ही शुक्र मनाने वाली बात हो जाये। बूढों के लिये अब बच्चों पर भरोसा करने वाला समय ही नहीं रहा।"

बिजली बोर्ड वरकर : "हर जगह नौकरी करने में दुर्गत है। ठेकेदारी प्रथा का विस्तार तो मजदूरों का और कचूमर निकाल रहा है। बच्चों को पढाया-लिखाया पर पढाने-लिखाने से क्या हुआ ? दसवीं-बारहवीं तक पढाना तो पढाना ही नहीं है। बारहवीं पास को पानी पिलाने तक की नौकरी नहीं मिल रही।"

सैनडेन विकांस मजदूर : "क्या जमाना आ गया है ! एक परमानेन्ट मजदूर के वेतन जितने पैसों में कम्पनी को तीन डिप्लोमा होल्डर मिल रहे हैं। ऐसे में किसी की भी नौकरी सुरक्षित कैसे रह सकती है ?"

न्यू एलनबरी वरकर : "जिस काम को तीन मजदूर करते रहे हैं उसे दो मजदूरों द्वारा करने को मैनेजमेन्ट कहती है। जिन विभागों में दो शिफ्ट थी वहाँ एक शिफ्ट कर दी है। इस प्रकार कई मजदूरों को खाली बैठा कर मैनेजमेन्ट कहती है कि वरकर फालतू हैं। कम्पनी ने वी.आर.एस. लगा दी है और इस्तीफों के लिये हम पर दबाव डाल रही है।"

सी.एम.आई. मजदूर : "काम ढीला होते ही कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये रखे सब वरकरों को निकाल दिया। काम नहीं होने पर कुछ दिन से हम परमानेन्ट वरकर भी 8 घण्टे कम्पनी में बैठ कर आ रहे हैं। इधर वी.आर.एस. लगा कर मैनेजमेन्ट ने स्टाफ से जबरन इस्तीफे लिखवाने शुरू कर दिये हैं। साफ है कि स्टाफ वालों को बलि के बकरे बनाने के बाद हमारा नम्बर लगायेंगे। क्या करें ?"

हितकारी पॉट्रीज वरकर : "पूरे फरीदाबाद की खाक छान ली – 1000-1200 रुपये महीना की नौकरी नहीं मिलती। करें तो क्या करें ? पाँच साल से फैक्ट्री बन्द पड़ी है लेकिन कम्पनी ने हमें हिसाब भी नहीं दिया है। मेरी जानकारी में ही चार हितकारी पॉट्रीज मजदूरों ने तो हालातों से तँग हो कर आत्महत्या कर ली है।"

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : "ज्यादा दिन नहीं हुये, तालाबन्दी-हड़ताल-एग्रीमेन्ट के जरिये कम्पनी ने स्टाफ व वरकरों में से 200 लोगों की बलि ली थी। मन मसोस कर हम इसे स्वीकार भी कर चुके थे कि चलो कम्पनी चल रही है इसलिये बाकी की रोजी-रोटी बरकरार है। लेकिन इधर तीन महीने से फिर हमारी नीन्द उड़ गई है। कभी 7 दिन का तो कभी 15 दिन का ले-आफ लगाना कम्पनी ने शुरू किया हुआ है।"

मितासो वरकर : "सैक्टर-6 स्थित प्लान्ट में हम 40 परमानेन्ट मजदूर हैं। आजकल काम ढीला है। लीडर कह रहे हैं कि 1984 के बाद परमानेन्ट किये 20 मजदूरों के नामों की लिस्ट मैनेजमेन्ट ने उन्हें दी है और कहा है कि इन 20 को नौकरी से निकालना है। क्या करें ?"

नूकेम मजदूर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्ट में 350 वरकर परमानेन्ट थे, अब 150 ही परमानेन्ट हैं। कैजुअल लगाते हैं और सुबह ड्युटी के लिये पहुँचने पर कभी कह देते हैं कि रात को आना, कभी रात वालों को कह देते हैं कि सुबह आना और कभी काम नहीं है कह कर लौटा देते हैं। नौकरी लगना अपने आप में एक भारी समस्या बनी है तभी तो यह सब झेलना पड़ रहा है। फैक्ट्री में केमिकलों का काम है, बहुत खतरनाक काम है लेकिन फिर भी 4 वरकरों का काम 2 से करवाते हैं और मैकेनिकल वालों से इलेक्ट्रिकल का तथा इलेक्ट्रिकल वालों से मैकेनिकल का काम करवाते हैं।"

एस.जी.एल. वरकर : "सराय के पास मथुरा रोड़ पर स्थित फैक्ट्री में मई का वेतन 28 जून को जा कर दिया था। जून की तनखा आज 14 जुलाई तक नहीं दी है। और वेतन भी जिन्हें परमानेन्ट कहते हैं उन्हें 1600 रुपये महीना तथा बाकी को 1350-1400 रुपये। जब कोई सरकारी अधिकारी चैकिंग करने आता है तब कुछ तयशुदा लोगों को पेश कर देते हैं जो कह देते हैं कि कम्पनी सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देती है। कभी-कभी अधिकारी के सामने फण्ड व ई.एस.आई. काट कर पट्ठों को 1800 रुपये पकड़ा देते हैं और फिर वापस ले लेते हैं।

"एस. जी. एल. में सब वरकरों की ड्युटी 12 घण्टे की है। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट सिंगल रेट से देते हैं और वह भी देरी से। ओवर टाइम के पैसे माँगने पर कम्पनी ने 3 मजदूरों का 12 जुलाई को गेट रोक दिया।

"कम्पनी ने ज्यादातर वरकर 9-10 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। जिन थोड़े-से वरकरों को परमानेन्ट कहते थे उन पुराने कर्मचारियों को कम्पनी ने अप्रेल से निकालना शुरू किया हुआ है और नई भर्ती कर रही है।

"एस.जी.एल. में सुरक्षा के नाम पर 12 घण्टे फैक्ट्री से बाहर नहीं निकलने देते। लन्च में भी बाहर नहीं जाने देते। कम्पनी कहती है कि बाहर निकलने से एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। और, सुरक्षा के नाम पर केमिकल विभाग में जो सेफ्टी शूज, दस्ताने, चश्मे तथा गुड़ कम्पनी देती थी वे भी इधर देने बन्द कर दिये हैं।" ■

नोएडा से

"चन्द महीनों में ही हम नोएडा की कई फैक्ट्रियों में काम कर चुके हैं। कुछ कम्पनियों का तो सिर्फ नम्बर रहता है – नाम का न तो बोर्ड होता और न पूछने पर बताते। हम सैक्टर-4 में ए-53 में, सैक्टर-6 में उसमान एक्सपोर्ट (एफ-37), सैक्टर-8 में ई-34 में, सैक्टर-6 में स्ट्रैंग एक्सपोर्ट्स (सी-42), सैक्टर-9 में किन पैक एक्सपोर्ट (एच-14), सैक्टर-6 में जी-23 में ... काम कर चुके हैं। कहीं कम्पनी ने हमें सीधा रखा और कहीं ठेकेदार के जरिये।

"नोएडा में एक्सपोर्ट लाइन की फैक्ट्रियों में ई.एस.आई. तथा पी.एफ. तो हैं ही नहीं। कोई रिकार्ड नहीं रखते। सादे कागज पर तनखा देते हैं। हाजरी कार्ड पर कोई नाम नहीं होता, न ही स्टैम्प होती। वरकर चाहे कम्पनी की तरफ से हों चाहे ठेकेदारों के जरिये रखे गये हों – सब के साथ यही है।

"नोएडा में इस समय सिलाई लाइन बहुत डाउन है, काम ही नहीं है। लोग मजबूरी में बहुत कम रेट पर काम कर रहे हैं। फुल कारीगर जिसे किसी भी मशीन पर बैठा दो उसे भी 65-80 रुपये से ज्यादा दिहाड़ी इस समय किसी कम्पनी में नहीं दे रहे। हैल्परों को तो 1200 रुपये महीना से ज्यादा नहीं देते।

"महिला हों चाहे पुरुष, मजदूरों के साथ नोएडा में फैक्ट्रियों में बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। बड़े साहब, मैनेजर और सुपरवाइजर गन्दी-गन्दी गालियाँ देते हैं और जबरन काम करवाते हैं। कहने को रविवार को छुट्टी होती है पर फैक्ट्री में काम करने आना जरूरी है – सिंगल रेट से ओवर टाइम देते हैं। बीमार होने के कारण एक रविवार को अपना भाई सैक्टर-2 स्थित स्ट्रैंग एक्सपोर्ट्स के बी-39 प्लान्ट में काम पर नहीं गया। सोमवार को पहुँचने पर उसे कुछ अन्य वरकरों के साथ लाइन में खड़ा कर गालियाँ दी, माफी माँगने को कहा और निकाल दिया।

"प्रोडक्शन एक-एक घण्टे की लिखते हैं और कम होने पर पैसे काट लेते हैं लेकिन पेमेन्ट समय पर नहीं देते। निकाल देने के बाद हिसाब के लिये 7 को आना ;10 को आना कह कर कितनी ही 10,7 तारीख निकाल देते हैं। सेक्युरिटी वाले अन्दर नहीं जाने देते। जब पैसे देते हैं तब भी पूरे नहीं देते। मेरे साथ कई महिलाओं को किन पैक एक्सपोर्ट में 1500 रुपये देंगे कह कर लगाया था लेकिन निकाला तब उन्हें 1100 रुपये ही दिये।

"नोएडा की एक्सपोर्ट फैक्ट्रियों में लड़कियों से आमतौर पर रात 9 बजे तक काम करवाते हैं। सीजन में तो रात 2 बजे तक, पूरी रात भी महिला मजदूरों से काम करवाते हैं।" ■

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

उँगली पे कँकड़

अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर : " कई महीनों से कम्पनी तनखा देने में देरी करती है। जून की तनखा भी 7 जुलाई से पहले नहीं दी। इस पर 9 जुलाई को शाम 4 बजे सब वरकर तनखा के लिये मैनेजिंग डायरेक्टर के दफ्तर गये। 'पैसे नहीं हैं – पैसे नहीं हैं' की रट लगाये रहते हैं पर अगले दिन से, 10 जुलाई से कम्पनी ने जून की तनखा देनी शुरू कर दी।"

आटोलैम्प वरकर : " इस बार हमारे लिये तनखा देरी से व किस्तों में देने का सिलसिला टूटा है। जून का वेतन हम मजदूरों को 12 जुलाई को दे दिया। लेकिन स्टाफ वालों को एक-एक हजार रुपये ही दिये हैं और कहा है कि जून का बाकी वेतन किस्तों में देंगे। बड़े साहब ने स्टाफ को समझाने के लिये कहा कि तनखा में देरी पर मजदूर खबर छपवा कर कम्पनी की बदनामी करते हैं, स्टाफ ऐसा नहीं करे बल्कि तसल्ली रखे।"

रेबेस्टोस मजदूर : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में एस्बेसटोस इस्तेमाल होता है जो कि बहुत खतरनाक है। चण्डीगढ से और यहाँ से डॉक्टर आते हैं पर लीपापोती ही होती है। परमानेन्ट वरकर तो 50 ही हैं पर कुल 300 मजदूर हैं। कैन्टीन नहीं है। मैनेजमेन्ट ने पक्षपात-दर-पक्षपात द्वारा मजदूरों में दो ग्रुप बना दिये हैं लेकिन फिर भी क्लच आटो प्लान्ट की तरह यहाँ भी 10 घण्टे की ड्युटी करने की कम्पनी की योजना को हम मजदूरों ने फेल कर दिया है।"

आटोपिन वरकर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्ट में आजकल काम ढीला है लेकिन मैनेजमेन्ट की गुण्डागर्दी में कोई कमी नहीं आई है। जिस दिन काम नहीं होता उस दिन ड्युटी पर पहुँचने के बाद जबरन वापस जाने को कहते हैं, दिहाड़ी नहीं देने की फिराक में रहते हैं। हम डेली पैसेंजर सुबह-सवेरे घर से निकल पड़ते हैं और भीड़भाड़ में धक्के खा कर फैक्ट्री पहुँचने पर जब कहते हैं कि वापस जाओ, काम नहीं है, दिहाड़ी नहीं मिलेगी ..... तब हम अड़ जाते हैं। इनकी सारी दादागिरी धरी रह जाती है और हाजरी लगवा कर, बैठ कर हम दिहाड़ी लेते हैं।"

यामाहा मोटर मजदूर : "सूरजपुर प्लान्ट में इन्जन असेम्बली में साँस लेने में भारी दिक्कत होती है। डस्ट फ्री डिपार्ट है कह कर कम्पनी ने एक भी एग्जास्ट फैन नहीं लगाया। इन्जन स्टार्ट करके देखना पड़ता है इससे उमस में पैट्रोल की बदबू से नाक में दम रहता है। बाहर का एक गेट है उसे कम्पनी सदा बन्द रखती। बार-बार के प्रयासों द्वारा हमने मैनेजमेन्ट और यूनियन को जुलाई के तीसरे हफ्ते में बाहर की तरफ वाला गेट खोलने को मजबूर कर दिया है। 'टेम्परेरी तौर पर खोल रहे हैं, एग्जास्ट फैन लगा कर बन्द कर देंगे' कहा है, चलेगा।" ■

सत्यमेव जयते

एस.पी.एल. मजदूर : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में आजकल कम्पनी हमें सलाह दे रही है कि बाहर कोई पूछे तो यह मत बताओ कि 12 घण्टे की ड्युटी है बल्कि यह कहो कि आठ घण्टे की है। रविवार को भी ड्युटी होती है यह बताओ ही मत, कहो कि साप्ताहिक छुट्टी होती है।"

भारत मशीन टूल्स वरकर : " मैनेजिंग डायरेक्टर पूरी दादागिरी से पेश आता है। वार्ड-23 से यह साहब नगर निगम का पार्षद भी है। जनवरी से देय मँहगाई भत्ता हमें अभी तक नहीं दिया है और हम देने को कहते हैं तो मैनेजिंग डायरेक्टर-पार्षद नन्द किशोर सिंघल हड़का देता है और कहता है कि नहीं देंगे, जो करना है करो।"

जरूरी हैं नई राहें

सैनल्यूब मजदूर : " प्लॉट 33, डी.एल.एफ. इन्डस्ट्रीयल एरिया में फैक्ट्री स्थित है। दिसम्बर 2000 में यूनियन ने तीन-साला एग्रीमेन्ट के लिये डिमान्ड-नोटिस दिया। खींचा-तान शुरू हुई। कम्पनी ने पहले 3 वरकरों को और फिर 6 को सस्पेन्ड किया तथा बहुतों को वार्निंग-चार्जशीटें दी। सस्पेन्ड को अन्दर लिवाने के लिये यूनियन ने स्लो-डाउन का आदेश दिया। कम्पनी ने 26 जून को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी। सौ लोग 15 दिन से फैक्ट्री से बाहर कर दिये गये हैं।"

जी के एन ड्राइवशाफ्ट वरकर : " 'अन्दर जाना है तो शर्तों पर हस्ताक्षर करो' – 'कोई दस्तखत नहीं करेगा' की जुगलबन्दी में दो महीनों की तनखायें गई, 16 सस्पैन्ड, वी.आर.एस. के तहत दर्जनों नौकरी गई, वर्क लोड़ में भारी वृद्धि और मैनेजमेन्ट की जकड़ मजबूत हुई है। पलट कर देखते हैं तो लगता है कि तीन वर्षीय एग्रीमेन्ट के फेर में हम जाने-अनजाने में शतरंज के मोहरों की तरह इस्तेमाल हुये हैं और कम्पनी की योजना लागू की गई है।"

इन्टरनेशनल हेल्ला मजदूर : " पहले कम्पनी का नाम जे.एम.ए. था। इन्टरनेशनल के चक्कर में यूनियन के सहयोग से कम्पनी ने खूब उत्पादन करवाया। फिर प्रोडक्शन ढीला कर दिया और यूनियन ने वी. आर.एस. के तहत नौकरी छोड़ने की वकालत की। इस पर हम ने दूसरी यूनियन का पल्लू पकड़ा। कम्पनी ने उत्पादन और ढीला कर दिया तथा कहती है कि पैसे नहीं हैं। दूसरी यूनियन चुप है।"

सुपर ऑयल सील वरकर : " इस बार सरकारी कर्मचारियों के नेताओं की सरपरस्ती में हम चले। फैक्ट्री गेट पर क्रमिक भूख हड़ताल की। दो महीने चार दिन फैक्ट्री से बाहर रहने पर हम टूट गये। श्रम विभाग में लीडरों और मैनेजमेन्ट ने समझौता किया। छत्तीस वरकरों को नौकरी से निकाल दिया गया है और उन्हें कम्पनी दिसम्बर तक हिसाब देगी।"

लिसिनेवल आटोलेक मजदूर : " तनखा से गुजारा नहीं चलता। ऐसे में हम ने इनसेन्टिव के चक्कर में अपने शरीर तोड़ने शुरू किये – प्यास लगी तो हम पानी पीने नहीं गये और पेशाब लगा तो पेशाब करने नहीं गये बल्कि काम में जुटे रहे ताकि दो पीस अधिक निकाल दें ...... कम पानी पीने और पेशाब रोकने से पत्थरी होती है तो हो, अभी चार पैसे कमाओ; इनसेन्टिव के लिये अधिक उत्पादन के चक्कर में लन्च हमारा लन्च नहीं रहा .... ठीक से नहीं खाने, समय पर नहीं खाने से हाजमा बिगड़ जाये चाहे आंतड़ियाँ सड़ जायें, अस्पताल की नौबत आयेगी तब देखा जायेगा; लालच हमारी फुर्सत को तो पूरी तरह खा ही गया, किसी से हँसने-बोलने की गुँजाइश भी इनसेन्टिव की दौड़ ने नहीं छोड़ी...... मानसिक रोग हो जायेंगे, पगला जायेंगे तब देखा जायेगा, अभी तो पैसे कमाओ। दो पैसे एक्सट्रा के लिये हम दुगना-तिगुना उत्पादन देने लगे। लालच में हम अपने तन-मन को छलनी करने में जुते रहे और कम्पनी चुपचाप टाइम स्टडी करती रही। मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये रखे सब वरकर निकाल दिये तथा बरसों से काम कर रहे कई उन मजदूरों को भी निकाल दिया जिन्हें मैनेजमेन्ट 'कैजुअल' कहती है। अब सामान्य तौर पर उतना उत्पादन मैनेजमेन्ट माँग रही है जितना उत्पादन इनसेन्टिव के लालच में अपने हाड़ तोड़ कर हम करते थे। इसके लिये कम्पनी नई तीन-साला एग्रीमेन्ट की फिराक में है हालाँकि अभी तो पिछले तीन-साला एग्रीमेन्ट को दो साल ही हुये हैं। नौकरी करनी है तो जो माँग रहे हैं वह उत्पादन दो वाले धमकी-भरे नोटिस कम्पनी लगा रही है। इनसेन्टिव के चक्कर में हम ने अपना कबाड़ा किया है।"

झालानी टूल्स वरकर : " 'दे देंगे', 'मिल जायेंगे', 'कम्पनी चलती रहे', 'कुछ तो मिल रहा है' ने हमारी ऐसी दुर्गत की है कि कहते नहीं बनता। 'दे देंगे' के फेर में हमारी दो-चार नहीं बल्कि 34 महीनों की तनखायें कम्पनी ने नहीं दी हैं। 'मिल जायेंगे' के फेर में 1996 में रिटायर हुये मजदूरों को पाँच साल बीत जाने के बाद भी कम्पनी से हिसाब नहीं मिला है। 'कम्पनी चलती रहे' के नाम पर ग्रेच्युटी खाते से हमारे पैसे हड़प लिये गये हैं और 1994 से हमारे भविष्य निधि खाते में पैसे जमा नहीं किये हैं। 'पे-स्लिप नहीं देने से क्या होता है, नोट तो दे रहे हैं', 'कुछ तो मिल रहा है' के फेर ने पेन्शन में हमें भारी नुकसान पहुँचाया है – 1200-1300 रुपये मासिक पेन्शन की बजाय रिटायर हुओं की 500-550 रुपये पेन्शन बनी है क्योंकि रिटायर होने से पूर्व वाले 12 महीनों के वेतन की औसत दो-चार सौ रुपये निकलती है।" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।